This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **8896**

Unique Paper Code : **2051403** **F-4**

Name of the Paper : **Hindi Naatak Evam Ekanki**

(हिंदी नाटक एवं एकांकी)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'भारतेंदु के नाटक राष्ट्रीयता के उनके आग्रह एवं उद्देश्य से निर्मित हैं।' 'भारत-दुर्दशा' नाटक के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक की रंगमंचीयता पर प्रकाश डालिए। 14

2. 'ध्रुवस्वामिनी' का चरित्र-चित्रण करते हुए इस नाटक की मूल समस्या पर विचार कीजिए।

अथवा

'बकरी' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 14

P.T.O.

3. 'नायक, खलनायक, विदूषक' एकांकी बाज़ारीकरण और नगरीकरण के द्वंद्व के बीच फँसे व्यक्ति की कथा है।' इस कथन के आलोक पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

अथवा

'सूखी डाली' एकांकी में निहित पारिवारिक जीवन की विडंबनाओं पर प्रकाश डालिए। 14

4. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×9=18

(क) सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनों।

सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनों॥

सबके पहिले जो रूप-रंग रस-भीनों।

सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनों।

अब सबके पीछे सोई परत लखाई।

हा हा! भारत-दुर्दशा न देखि जाई॥

अथवा

शादी एक गहरी समस्या है, आप उसके साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। मैं पूछता हूँ, आप एक फैक्टरी में तो हर तरह का विज्ञान, कानून, विशिष्ट ज्ञान लगाते हैं, फिर क्या कारण है कि जीवन को ऐसे परमात्मा के भरोसे छोड़ दिया जाए कि उसमें आदमी की सस्ती-से-सस्ती और निकम्मी-से-निकम्मी शक्तियाँ ही सिर्फ काम में लायी जाएँ। आप कहते हैं, मैं औरत को समझ नहीं पाता। जनाब, यह सब कोरी बातें हैं, बातें! समझने की क्या जरूरत है ? मशीन की एक पुली दूसरी पुली को नापने, जोखने, समझने नहीं जाती। स्त्री-पुरुष तो जीवन की मशीन के दो पुरजे हैं—दो!

(ख) नीचे दिए गए अवतरणों का रचना-कौशल निर्देशानुसार रेखांकित कीजिए (**150** शब्दों में) :

स्त्री-अस्मिता :

....जब तुम आ गए हो तो थोड़ा ठहरूँगी। यह तीखी छुरी इस अतृप्त हृदय में—विकासोन्मुख कुसुम में—विषैले कीट के डंक की तरह चुभा दूँ या नहीं, इस पर विचार करूँगी। यदि नहीं तो मेरी दुर्दशा का पुरस्कार क्या कुछ और है ? हाँ, जीवन के लिए कृतज्ञ, उपकृत और आभारी होकर किसी के अभिमानपूर्ण आत्म-विज्ञापन का भार ढोती रहूँ—यही क्या विधाता का निष्ठुर विधान है ? छुटकारा नहीं ? जीवन नियति के कठोर आदेश पर चलेगा ही—तो क्या यह मेरा जीवन भी अपना नहीं है ?

अथवा

राजनीतिक व्यंग्य :

तन मन धन उन्नायक जय हे
जय जय बकरी माता!
अन्याय अहिंसा दंभ क्रूरता
भुला, करै मन चंगा,
ए बी सी डी ई एफ जी एच
क ख ग घ अंगा।
दुर्जन सज्जन आएँ।
सब तेरे गुन गाएँ
हे त्राता सुख दाता।
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे!

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 8+7=15

(क) 'ध्रुवस्वामिनी' में इतिहास और कल्पना

(ख) 'भारत दुर्दशा' में गीत-संगीत

(ग) 'बकरी' में अभिव्यक्त राजनीतिक बोध

(घ) एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'स्ट्राइक' की समीक्षा।